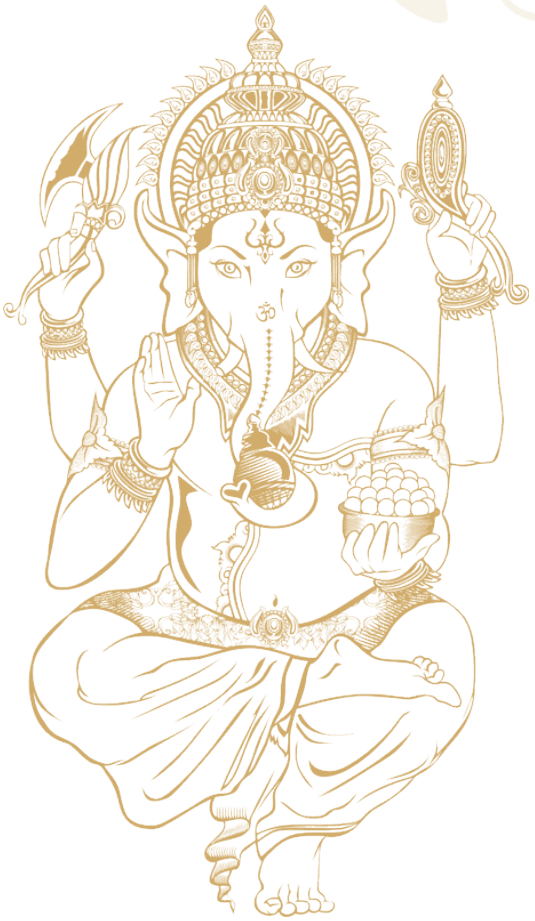

Arvind

09 Sep 1978

03:32 PM

Jaisingh Nagar

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121344201

तिथि 09/09/1978 **समय** 15:32:00 **वार** शनिवार **स्थान** Jaisingh Nagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:33:33
अक्षांश 23:38:00 उत्तर **रेखांश** 78:33:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:15:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:28:36 घं
वेलान्तर	00:02:30 घं
सूर्योदय	06:00:08 घं
सूर्यास्त	18:26:01 घं
चैत्रादि संवत	2035
शक संवत	1900
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	7
नक्षत्र	अनुराधा
योग	विष्कुम्भ
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ने-नैनसुख
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

शनि 4वर्ष 5मा 29दि

शुक्र

10/03/2007
10/03/2027

शुक्र	09/07/2010
सूर्य	09/07/2011
चन्द्र	09/03/2013
मंगल	09/05/2014
राहु	09/05/2017
गुरु	08/01/2020
शनि	10/03/2023
बुध	08/01/2026
केतु	10/03/2027

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 11मा 10दि

उल्का

20/08/2020
21/08/2026

उल्का	20/08/2021
सिद्धा	21/10/2022
संकटा	20/02/2024
मंगला	20/04/2024
पिंगला	20/08/2024
धान्या	19/02/2025
भ्रामरी	20/10/2025
भद्रिका	21/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:55:54	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			22:49:00	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	स्वराशि	1.51	अमात्य	पितृ	क्षेम
चंद्र			13:30:39	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	नीच राशि	0.98	भातृ	मातृ	जन्म
मंगल			29:29:01	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि	1.23	आत्मा	भ्रातृ	वध
बुध			05:52:27	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	मित्र राशि	0.92	कलत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			07:12:33	कर्क	पुष्य	2	शनि	बुध	उच्च राशि	1.10	ज्ञाति	धन	जन्म
शुक्र			08:23:44	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	मूलत्रिकोण	1.28	पुत्र	कलत्र	मित्र
शनि		अ	12:02:05	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	शत्रु राशि	1.35	मातृ	आयु	विपत
राहु			03:13:54	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु			03:13:54	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

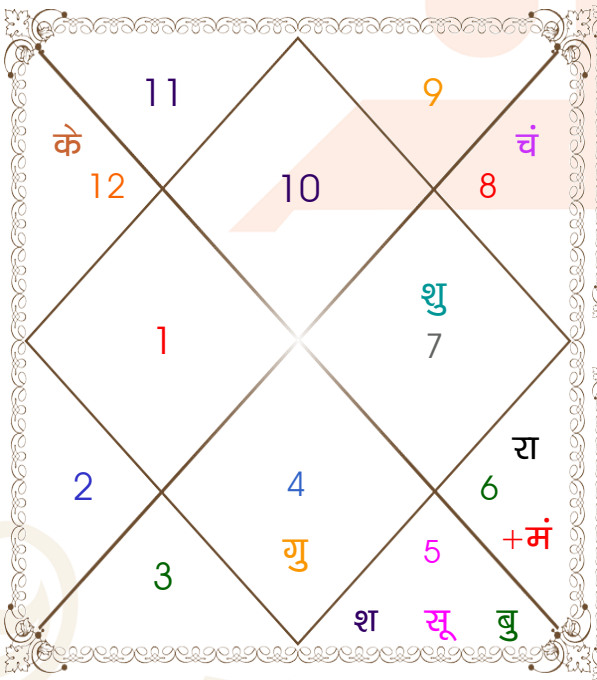

चन्द्र कुंडली

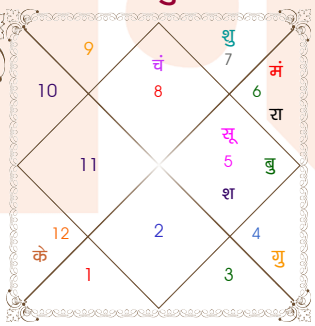

नवमांश कुंडली

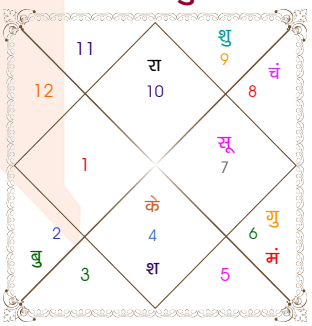

सर्वाष्टकवर्ग

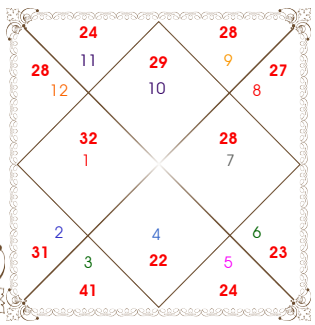

दशमांश कुंडली

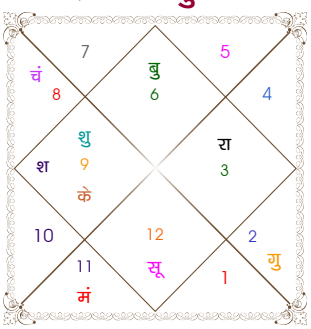

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, योनि मृग, नाड़ी मध्य, वर्ग सर्प तथा गण देव होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ने" से प्रारम्भ होगा यथा- नेकीराम, नेत्रसिंह आदि।

आप पुरूषार्थ करने में विश्वास रखेंगे तथा अपने समस्त लौकिक कार्यों को परिश्रम पूर्वक करेंगे तथा उसमें सफलता प्राप्त करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र अत्यन्त ही व्याप्त होगा। फलतः इधर उधर देश विदेश में आपका आवागमन होता रहेगा। अपने संबंधियों तथा स्वजनों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही प्रेम एवं स्नेह का भाव रहेगा। अतः इनकी भलाई के लिए कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा इनको पूर्ण सहायता एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इन सब कार्यों को करने से आप मानसिक रूप से अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी जिसका आप प्रायः अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे इससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप विपुल मात्रा में धन से सदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में यदा कदा ही इसके अभाव की अनुभूति करेंगे। इसके साथ ही समस्त सुख संसाधनों से युक्त रहकर समस्त सुखों में भी लिप्त रहेंगे। समाज में आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा सभी सामाजिक जन आपको पूजनीय एवं सम्माननीय समझेंगे एवं यथोचित आदर एवं सत्कार आपको प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक वैभव युक्त सामर्थ्यशाली पुरूष भी होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप एक धनवान व्यक्ति होंगे तथा आपका अधिकांश समय घर से बाहर विदेशादि में ही व्यतीत होगा। यदा कदा आप अपनी अत्यन्त व्यस्तता के कारण या अन्य कारणों से भूख के कारण व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इसके साथ ही घूमने फिरने तथा यात्रा आदि करने में आप अत्यन्त शौकीन रहेंगे तथा समय समय पर पिकनिक आदि कार्यक्रमों का आयोजन करते रहेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोडनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

शरीर से आप कान्तिमान पुरूष होंगे तथा मुखमंडल भी कान्ति से चमकता रहेगा। आपकी प्रवृति उत्सव प्रिय होगी अतः समय समय पर आप घर से बाहर पार्टी इत्यादि का आयोजन करके अपनी उत्सवप्रियता का प्रदर्शन करेंगे। आप अपने शत्रुओं को पराजित करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा वे आपसे अत्यन्त ही प्रभावित एवं भयभीत से रहेंगे। आप विविध प्रकार की कलाओं के ज्ञाता भी होंगे एवं अपने जीवन में नाना प्रकार के धनैश्वर्य का भी उपयोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

वृश्चिक राशि में जन्म होने के कारण आपका सीना विस्तृत तथा आखें बड़ी बड़ी तथा सुन्दर होंगी। साथ ही शरीर के वर्ण में श्यामलता का भी समावेश रहेगा। आपके हाथ तथा

पैर में मत्स्य चिन्ह होगा तथा अधिकांश हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होंगी। आपका माता पिता तथा गुरूजनों से सामान्य संबंध रहेगा। अतः इनसे आपको सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगे। परन्तु बुद्धि से आप काफी तीक्ष्ण रहेंगे एवं बुद्धि चातुर्य तथा परिश्रम से राज्य के किसी पद को सुशोभित करेंगे। आप क्रूर तथा कठोर कार्य करने के लिए उत्सुक रहेंगे। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी विभाग में आप की नियुक्ति हो सकेगी। कभी कभी आप स्वभाव से अत्यन्त ही कुटिलता का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न होंगे। आप गुप्त रूप से क्रूरकार्यों को सम्पन्न करेंगे या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर तथा मस्तक भी आकार में विस्तृत रहेगा। अन्य जनों की वस्तुओं को देखकर आपके मन में लोलुपता का भाव जागृत होगा। आपका शरीर भी लावण्यता विहीन होगा तथा इसमें कठोरता तथा रूक्षता की बहुलता रहेगी। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा। आपकी दाढ़ी तथा नाखूनों में आघात के चिन्ह भी विद्यमान रहेंगे। धनैश्वर्य से आप आजीवन सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप अत्यन्त चतुर होंगे एवं किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप बन्धुवर्ग से भी समयानुसार सहयोग प्राप्त करते रहेंगे। आप एक प्रतापी पुरूष होंगे तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके स्वभाव में उग्रता का समावेश भी रहेगा एवं अन्य सामाजिक जनों से भी आपके औपचारिक संबंध रहेंगे। साथ ही सरकार द्वारा आप धनहानि भी प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप अपने जीवन काल में धनाढ्य पुरूष होंगे तथा वृहत परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से जनों का भी पालन पोषण करने में समर्थ रहेंगे। महिलाओं के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगे तथा इनसे पूर्ण मान सम्मान सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे। आप सरकारी सेवा में भी नियुक्त रहेंगे। लेकिन आप हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा अपने मन में रखेंगे तथा आजीवन इसे प्राप्त करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही दृढ़ होगी तथा जिस कार्य को एक बार प्रारम्भ कर देंगे उसे दृढ़ता के साथ पूरा करके ही छोड़ेंगे। साथ ही आप एक साहसी पुरूष होंगे परन्तु अन्य लोगों से आपके विवाद भी चलते

रहेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने के लिए भी उद्यत होंगे परन्तु इसमें आपको आर्थिक हानि अधिक होगी। आपके स्वभाव में उग्रता की बहुलता होने के कारण आप विवाद युक्त प्रवृति के भी होंगे एवं अन्य लोगों से विवाद करते रहेंगे। साथ ही जीवन में शान्ति की अनुभूति कभी कभी ही होगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यावस्था से ही प्रवासी रहेंगे तथा इधर उधर भ्रमण करते रहेंगे। स्वभाव अभिमानी भी रहेगा। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह भाव रहेगा। अपने साहस तथा परिश्रम द्वारा धनार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप चतुराई का भी प्रदर्शन करेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी साथ ही आप सरल बुद्धि के स्वामी होंगे। अपने विचारों को सरलता से प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को भी सुगमता पूर्वक ग्रहण करना आपकी विशेषता रहेगी। आप अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना प्रायः पसन्द करेंगे। अन्य जनों के गुणों के विषय में आप विस्तृत ज्ञान रखेंगे तथा स्वयं भी महापुरूषों द्वारा प्रतिपादित उत्तम एवं सद्गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के धनैश्वर्य एवं वैभव से सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे।

आप देखने में अत्यधिक सुन्दर तथा आकर्षक होंगे। आपके स्वभाव में दानशीलता का भाव रहेगा एवं इस प्रवृति का आप पालन करते रहेंगे। साथ ही आप बुद्धिमान तथा सादगी पसन्द भी होंगे एवं समाज में श्रेष्ठ विद्वान के रूप में आप सम्मानित रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने कार्यकलापों को करना पसन्द करेंगे। आप की प्रवृति भी शान्त रहेगी तथा उपद्रवी भाव का इसमें अभाव रहेगा। आपकी आजीविका के साधन भी शुभकार्यों से युक्त रहेंगे। सत्य एवं धर्म के प्रति आपकी हार्दिक श्रद्धा रहेगी तथा अपने जीवन में यत्नपूर्वक आप इसका पालन करते रहेंगे। आपका अपने सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति अत्यन्त ही हार्दिक लगाव रहेगा तथा इनके कल्याणकारी कार्यों को करने में आप हार्दिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप साहसी तथा निर्भीक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा झगड़ा या विवादादि कार्यों में हमेशा विजय प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको

सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथमप्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ एवं अनिष्टकर रहेगा। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, व्यतिपातयोग रेवती नक्षत्र तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए तथा शिवालय जाकर विल्वपत्र आदि अर्पण करने चाहिए एवं सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए साथ ही सोना, मूंगा, तांवा लाल वस्त्र, लाल फूल, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का आदि पदार्थों का भी किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप पूर्ण करवाने चाहिए इससे आपको सब प्रकार से शान्ति तथा शुभफल मिलेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।